शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

केदारनाथ सिंह के काव्य में ग्रामीण जीवन

सुरेश सरोठिया (शोधार्थी)
हिन्दी साहित्य
माता जीजा बाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी कविता के समकालीन परिदृश्य में केदारनाथसिंह का कवि-कर्म अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके पास अनुभवों का ठोस संसार है, जिसे उन्होंने अपने आसपास के वातावरण में गहरे डूबकर प्राप्त किया है। उनकी काव्य-संवेदना एवं बिम्बों का दायरा गाँव से शहर तक परिव्याप्त है, जिसमें आने वाली छोटी से छोटी सी उत्कृष्ट मानवीय लगाव से जीवन्त हो उठती है। अपनी धरती और अपने लोगों की गहरी पहचान से निःसृत उनकी कविताएँ बेहद आत्मीय लगती हैं। साहित्यकारों का कहना है कि उनका भाव बोध और रचना रूप पाठक को आतंकित नहीं , बल्कि अपने रागात्मक सौम्य से सम्मोहित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है

व्यक्तित्व और कृतित्व

केदारनाथ सिंह का जन्म उत्तप्रदे श के पूर्वांचल जिले के चकिया बलिया नामक ग्राम में गौतम क्षत्रिय कुल में 16 नवम्बर 1934 ई.में हुआ। केदारनाथ सिंह जी अपने कुल को गौतम बुद्ध से जुड़ा हुआ एवं स्वयं को उनका वंशज मानते हैं। कवि कार्य का निर्वाह करते हुए देश के अन्य भू-भागों में होने वाली विभिन्न संगोष्ठियों , कवि सम्मेलनों और अन्य साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनकी काव्यगत रचनाओं में 'अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ , सृष्टि पर पहरा , बाघ, तालस्ताय और साइकिल आदि। इन संग्रह की कविताएँ इनके गहन चिंतन की भाव-भूमि पर लिखी गई हैं। इनकी कविता लोक जीवन के घर आँगन, खेत-खलिहान से शुरु होकर महानगरीय एवं समसामयिक जीवन संदर्भों , संवेदनाओं एवं बिम्बों के कारण ही इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (म.प्र.) , कुमारन आषन पुरस्कार (केरल), दिनकर पुरस्कार (बिहार), जीवन भारती सम्मान (उड़ीसा) , दयावत मोदी पुरस्कार (उ.प्र.) , जोषुआ (आंध्रप्रदे श) एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार (दिल्ली) से सम्मानित किया गया है।

केदारनाथ सिंह का प्रारंभिक परिवे शगत जीवन मूलत: ठेठ गाँव में बीता जहाँ पर गाँव की समस्त ग्रामीण गतिविधियाँ अपने स्वाभाविक रुप में चलती है। ऋ तुओं के अनुसार खेती , गृहस्थी में होने वाले परिवर्तन , खेत खलिहान, नदी-नाले और तीज-त्यौहार आदि गतिविधियों का प्रभाव केदारनाथ सिंह के जीवन पर स्वाभाविक रुप से पड़ा, जिसे इनकी रचनाओं एवं वक्तव्यों के माध्यम से भली भांति जाना जा सकता है।

"मेरा आरम्भिक जीवन ठेठ गाँव में बीता। मेरा परिवार कृषि व्यवसाय से जुड़ा था , इसलिए घर में जो माहौल था, वह बिल्कुल वैसा ही था, जैसा कि एक किसान परिवार में होता है।"1

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"गाँव में परिस्थिति के साथ जीने की शिक्षा मिलती है। तैरना, पैदल-चलना, पेड़ पर चढ़ना ये सब गाँव के उपहार हैं। बाढ़ की पहली स्मृति , नदी का विराट रूप है। मैं भयभीत हुआ था , उनकी गगन भेदी आवाज अचानक, गड़गड़ धड़ाम की आवाजें, दूर से आती नावें अपनी पालों के पंख फैलाये उड़ने को तैयार, चीलों की तरह, शाम को कहीं डूब जाता , सूरज बार-बार मुस्करा कर कुछ कहता सा, उगते पौधे, हाथों से मुँह छिपाये सहमे हुए अंकुर, बढ़ती बेलें, खिलते फूल सभी का प्रभाव मन पर पड़ता था।"2

काव्य में ग्रामीण जीवन

उनका गाँव, उनका घर आज भी उनकी कविताओं में जीवित है , जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में मुख्य स्थान दिया है। एक उदाहरण दृष्टव्य है:-

"हँसी की एक झालर
टँगी हुई तारों पर
हवा के धक्के से
जिधर झुक जाती है
उधर
मेरा घर है
छोटा-सा घर है
और छोटे से घर में
असंख्य दिशाएँ
हर दिशा
तेजी से
दूसरी दिशाओं को
जहाँ पर छूती है
वहाँ
मैं जीवित हूँ।"3

घर एवं गाँव की पुरानी स्मृतियों को याद करते-करते उनको डाकिये की याद आ जाती है। डाकिया जो हफ्ते में एक दिन 'बुधवार को' गाँव में आता है और जब वह आता है तो मुर्दानी छाए हुए चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ जाती है। कवि कहते हैं -

"तब डाक घर नहीं था गाँव में /दूर किसी शहर में/ आता था डाकिया थैला लटकाये हुए / हर बुधवार को/ और जब आता था / तो सिर्फ यह सोच कर/ कि ओ ..आज बुधवार है / एक दिव्य सिहरन से/ भर जाते थे बूढ़े।"4

साधारण खेलकूद एवं स्वच्छ प्राकृतिक वातावरण के साथ-साथ गाँव के इन स्वतः स्फूर्त कार्यकलापों के बीच केदारनाथ सिंह ने कुछ ऐसा भी पाया जो कालांतर में उनकी रचना-प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग बना। उन्होंने बाजार से अगर नक्षा खरीदा तो उसमें अपने घर को ही खोजा-

मैं बाजार गया
मैंने बाजार में खरीदा एक नक्षा
नक्षे में बहुत कुछ था
जिसे मैं जानता ही नहीं था
इसलिए नक्षे को ले आया घर
टांग दिया दीवार पर
अब दीवार भरी-पूरी लग रही थी
जैसे नक्षा पृथ्वी को ले आया हो
मेरे घर में
मैं खुश था नक्षे में
क्योंकि वहाँ इतनी जगह थी
इतनी सारी जगह
कि मैं उसमें सदियों तक रह सकता था
अपने पूरे कुनबे के साथ।

गाँव की स्मृति यों को वे कभी भुला नहीं पाये। उनकी अनेक रचनाओं में गाँव की मिट्टी की सोंधी खुशबू मिलती है। उदाहरण के रूप मे 'टमाटर बेचती हुई बुढिया' कविता में कवि टमाटर बेचने वाली बुढिया की मनोद शा को पहचान कर सजीव चित्रण करते हैं -

"गहरे सुर्ख टमाटर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उनकी टोकरी में भरे हैं
धूप टमाटरों को
चाकू की तरह चीर रही है
टमाटर के अंदर बहुत सी नदियाँ हैं
और अनेक शहर जिन्हें बुढिया के अलावा
कोई नहीं जानता।"5

जमीन, बिना नाम की नदी , बैल, टूटा हुआ ट्रक आदि अन्य रचनाओं में भी उनके ग्रामीण परिवेश संबंधी सोच एवं समझ को अच्छी तरह से जाना जा सकता है। गाँव के इस परिभाषा बदलते परिवेश में भी वे अड़िग है। शायद वे गाँव के साथ, अपने आपको बदलना ही नहीं चाहते। 'टूटा ट्रक' वहीं जैसा का तैसा खड़ा है , वह टूटा भी है और हैरान भी है-

"मैं पिछली बरसात से उसे देख रहा हूँ
वह वहाँ उसी तरह खड़ा है
टूटा हुआ और हैरान
और अब उससे अँखुए फूट रहे हैं।"

केदारनाथ सिंह ने कविता लिखना तो विद्यार्थी जीवन में ही आरम्भ कर दिया था। व्यवस्थित रूप से कविताओं का पहला संग्रह 'तेईस कविताएँ' था। अज्ञेय जी द्वारा सम्पादित 'तीसरे सप्तक' में प्रकाशित कविताएँ लोकभूमि में रचित कविताएँ हैं।

'अभी बिल्कुल अभी ' काव्य संग्रह की कविताएँ गाँव की भाव-भूमि पर टिकी हुई हैं एवं गाँव कवि की चेतना में घुल-मिल गया है। 'जमीन पक रही है ' काव्य संग्रह में स्वच्छन्दतावाद , हर्षोल्लास, सौन्दर्य चेतना एवं व्या वहारिक व रोजमर्रा की जिन्दगी में काम आने वाले विषय हैं।

'यहाँ से देखो ' काव्य संग्रह की कविताएँ लोक-भूमि के यथार्थ अनुभवों को संवेदनात्मक रुप में चित्रित करती हैं और सामाजिक वातावरण की झाँकी प्रस्तुत करती है। 'अकाल में सारस' काव्य संग्रह के कविताओं में कवि मनुष्य के संघर्ष के बारे में संकेत करते है। 'जमीन पक रही है' काव्य संग्रह की कविताओं में गाँव कवि के लिए महत्वपूर्ण हो गया है , क्योंकि गाँव में वे कुछ वस्तुएँ आज भी सुरक्षित है या मिल जाती है जो शहरों में तेजी से समाप्त होती जा रही है 'माँझी का पुल' व 'बिना नाम की नदी ' ऐसे ही सरल ग्रामीण भाव-बोध की कविताएँ हैं -

"लाल मोहरा हल चलाता है
और ऐन उसी वक्त
जब उसे खेती की जरुरत महसूस होती है
बैलों के सींगों के बीच दिख जाता है
माँझी का पुल।"6

केदारनाथ सिंह की एक अमिट स्मृति जो आज भी उनके विचारों में ताजा है, 'बिना नाम की नदी है'

"मेरे गाँव को चीरती हुई
पहले आदमी से भी बहुत पहले से
चुपचाप बह रही है वह पतली सी नदी
जिसका कोई नाम नहीं
तुमने कभी देखा है
कैसी लगती है बिना नाम की नदी ?
कीचड़ सीवर और जलकुँभियों से भरी
वह इसी तरह बह रही है पिछले कई सौ सालों से
एक नाम की तलाष में
मेरे गाँव की नदी।"7

ऐसे अनेक चित्र केदारनाथ सिंह के जहन में बिल्कुल ज्यों के त्यों रखें हैं, जिसका वर्णन करते वे कभी थकते नहीं हैं। एक ओर रचना 'सूर्यास्त' में हालांकि बिम्ब विधान की प्रवृत्ति अधिक है परन्तु प्रकृति स्वतः ही मुखरित होती हुई प्रतीत होती है, जिसमें धूप को विविध वर्णों रंगों में प्रस्तुत किया है।

"दिन ढ़लने के बाद/ लाल, भूरी, हरी, नीली, पीत संख्यातीत/ फर-फराती/ धूप सी उल्टी पताकाएँ।"8

'पतझड़ की एक-एक शाम ' कविता में शांत हवा में कवि के मन की पर्तें समुद्री दस्तक सुनाती है। समुद्र की लहरें कवि के मन पर एक के बाद एक दस्तक देती है। यहाँ प्रकृति एवं कवि के बीच एक रिश्ता-सा कायम होता है। जैसे-

सभी ओर से
अन्तरतम के किसी कोण पर
झुका हुआ सा
सुनता प्रतिपल
एक समुद्री दस्तक
मन की पर्त-पर्त पर
धीमे-धीमे।

केदारनाथ सिंह को हम भाषा का जादूगर कह सकते हैं, उनकी शब्दों की रंगत मिजाज और ताप उनकी अलग पहचान बनाती है। वे त्रिलोचन की तरह भाषा का आगम समुद्र होने का दावा तो नहीं करते, परन्तु वे दाने में धुन की तरह सीधे शब्दों के भीतर उतर जाते है और कुछ ऐसा करते है कि एक नीरव विस्फोट के साथ उन शब्दों का रंग-अर्थ, रुप और क्रम भी बदल देते हैं। वे कहते है -

"मैं पूरी ताकत के साथ
शब्दो को फेंकना चाहता हूँ आदमी की तरफ
यह जानते हुए कि आदमी का कुछ नहीं होगा
मैं भरी सड़क पर सुनना चाहता हूँ वह धमाका
जो शब्द और आदमी की टक्कर से पैदा होता है।

'शब्द' केदारनाथ सिंह के लिए मनुष्य का पर्याय है। वह एक ऐसे मनुष्य का पर्याय जो चेतन है , जीवंत है, जो जीवन की मुष्किलों से जूझने का साहस रखता है। 'ठण्ड से नहीं मरते शब्द' शीर्षक कविता में वे कहते हैं-

"ठण्ड से नहीं मरते शब्द
वे मर जाते हैं साहस की कमी से
कई बार मौसम की नमी से
मर जाते हैं शब्द।"

केदारनाथ सिंह भाषा पर असाधारण अधिकार रखते हैं और नई जागरुकता भी, वे न तो कविता को शब्दों से बंधी हुई मानते और न शब्दों के व्याकरण से सीमित मानते हैं -

बिजली चमकी, पानी गिरने का डर है
वे क्यों भाग जाते हैं, जिनके घर है
वे क्यों चुप हैं जिनको आती है भाषा।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि केदारनाथ सिंह के काव्य में ग्रामीण जीवन , संवेदना, बिम्ब, धर्म, लोकसाहित्य, प्रकृति चित्रण आदि के भावों को अपने काव्य संग्रह व साहित्य में स्थान दिया गया है। जिससे पाठक को भाषा का ज्ञान एवं नई जागरुकता की प्रेरणा मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. कवि केदारनाथ सिंह: भारत यायावर पृष्ठ 44
2. कवि केदारनाथ सिंह: भारत यायावर पृष्ठ 44-45
3. प्रतिनिधि कविताएँ: कवि केदारनाथ सिंह: राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण, 1985, पृष्ठ-105
4. उत्तर कबीर एवं अन्य कविताएँ: केदारनाथसिंह , राजकमल प्रकाशन, दूसरा संस्करण, 1999, पृष्ठ-42
5. मेरे समय के शब्द: केदारनाथ सिंह , राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 187
6. नंदकिशोर नवल: समकालीन काव्य यात्रा, पृष्ठ 91
7. जमीन पक रही है: केदारनाथ सिंह, कमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 1980, पृष्ठ 16
8. अभी बिल्कुल अभी: केदारनाथ सिंह पृष्ठ 59